डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

सह-संपादक

डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6
प्रथम संस्करण
2020

सर्वाधिकार ©
संपादकाधीन

प्रकाशक
प्रतिभा प्रकाशन
केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)
मुजफ्फरपुर-842001
फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन
अमित कुमार कर्ण

आवरण
शशिकांत सिंह

मुद्रक
जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य
350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा**—116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय**—121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ० गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** —133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** —137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** —140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** —144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** —153
डॉ०. गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** —157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** —163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** —170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** —176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** —180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** —185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** —188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** —200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** —205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** —211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** —216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय **विकास कुमार** —220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** —225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — **भगवानदास मोरवाल** —227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — **डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**—232

साक्षात्कार :
डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार
(समीक्षा से साभार) — **डॉ. पूनम सिन्हा** —236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — **डॉ. पूनम सिन्हा** —243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. सुनीता गुप्ता** —258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा** —263
डॉ. माधव कुमार
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **विनीता कुमारी** —268
प्रतिवेदन —271

डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय

–डॉ० पूनम सिन्हा
डॉ० माधव कुमार

माधव कुमार–उनका एक शोध-प्रबंध है–'हिन्दी कथा साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव', जो 1966 ई. में ग्रंथ निकेतन, पटना से प्रकाशित हुआ। इसी शोध-प्रबंध से उपन्यास आलोचना के क्षेत्र में उनका पदार्पण हुआ। यह शोध-प्रबंध आलोचना के क्षेत्र में कहाँ तक कारगर है?

डॉ. रामवचन राय– इसे संयोग कहें या सौभाग्य कि 1962 में इस पूरे शोध-प्रबंध की जो हस्तलिखित प्रति थी, वह मैंने तैयार की, क्योंकि उनकी लिखावट खराब थी। उस समय मैं पटना कॉलेज का छात्र था। चूँकि मैं उनका छात्र था, इस कारण उन्होंने एक दिन हमसे कहा कि ''हमारी लिखावट अच्छी नहीं है, टाइपिस्ट मेरा लिखा हुआ नहीं समझ पाएँगे। इसलिए अपनी लिखावट में तुम मेरे शोध को उतार दो।''

उस समय वे चौधरी टोला में सुलतानगंज टोला के आगे रहते थे। वे एक-एक अध्याय देते थे। मैं अपनी लिखावट में उतारता जाता था। वे उसे टाइपिस्ट को देते जाते थे। यहाँ से मेरा उनसे परिचय हुआ। पन्ने जहाँ फटे होते थे, मैं उन्हें जोड़कर लिखता था। एक हजार से ज्यादा पृष्ठों का वह शोध-प्रबंध था। एक अध्याय मुझे देते थे, मैं उसे दो-तीन दिन में लिख कर देता था। इसलिए उस शोध-प्रबंध का पहला पाठक होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था, क्योंकि मैं उसकी प्रतिलिपि तैयार करता था। मैं उनकी लिखावट को ब्राह्मी लिपि कहता हूँ।

आलोचना के क्षेत्र में यह एक बुनियादी कार्य था। इसमें दो चीजें हैं। रुचि से यह व्यंजित होता है कि क्या पाठकों की रुचि के अनुसार लेखक

हैं अथवा पाठकों की रुचि लेखक को किस हद तक प्रभावित करती है। 1962 या 63 में उन्हें डिग्री मिली थी। हिन्दी आलोचना में कथा-साहित्य में नहीं के बराबर काम हुआ था, क्योंकि हिन्दी आलोचना में मुख्यतः कथालोचन की परंपरा थी। साहित्यशास्त्र की परपंरा नहीं थी। काव्यशास्त्रीय परंपरा समृद्ध थी, किन्तु काव्यशास्त्र साहित्यशास्त्र (सभी विधाओं) में बनने की प्रक्रिया में था। यह क्षेत्र अछूता था तो इस पर उन्होंने काम करना शुरू किया। पहले उन्होंने 'पठन रुचि का प्रभाव' लिखा था। ऐसा नहीं था कि वे कोई मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष निकाल रहे थे। गोपाल राय जी ने 'समीक्षा' पत्रिका का नाम 'समीक्षाएँ' रखा था, तो मैंने उन्हें 'समीक्षा' रखने का सुझाव दिया। इस बात की चर्चा जब मैंने 'समीक्षा' पर केन्द्रित कार्यक्रम में की तो उनके मँझले पुत्र ने मंच से ही इस बात का खण्डन किया। मैं चुप होकर बैठ गया। वे दिल्ली से 'समीक्षा' की पहली प्रति लेकर आए थे। मैंने उनसे वह प्रति लेकर उसके संपादकीय को पढ़ा। संपादकीय के प्रथम पैराग्राफ में ही उस बात की चर्चा की थी। कम-से-कम वे उस संपादकीय को पढ़ तो लेते।

माधव कुमार– गोपाल राय जी हिन्दी का पहला उपन्यास पं. गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) को मानते हैं। सन् 1966 ई. में इस उपन्यास का सम्पादन प्रकाशन करते हुए उन्होंने इसके पहले उपन्यास होने को लेकर पर्याप्त ठोस तर्क उपस्थित किया। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

डॉ. रामवचन राय– टेक्स्ट पर उनका बहुत ध्यान था। मूलतः वे शोधार्थी थे। प्रकाशन-तिथि वगैरह आदि का मिलान करते थे। अतः डॉ० गोपाल राय का कहा हुआ हम अंतिम मानते थे। शोधार्थी का पहला लक्षण है मूल तक जाना, जड़ तक जाना।

माधव कुमार– "जब गुटबाजियों का शोरगुल थमेगा और अनर्गल अखाड़ेबाजी खत्म होगी, उस समय हिन्दी की प्रबुद्ध पीढ़ी डॉ० गोपाल राय जैसे साधक साहित्यकारों की तलाश करेगी। वह दिन आने ही वाला है।" आपकी इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि डॉ० गोपाल राय द्वारा की गयी साहित्य-साधना को आपने दिल से महसूस किया है।

डॉ. रामवचन राय– हिन्दी आलोचना में गुटबाजी बहुत थी। एक दौर था कि एक तरफ डॉ० नगेन्द्र, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह थे। डॉ० रामविलास शर्मा की मार्क्सवादी धारा थी, तो दूसरी तरफ डॉ० नगेन्द्र की रसवादी परपंरा थी। गोपाल राय जी ने अपने को किसी गुट से नहीं जोड़ा

था। जैसे कि नामवर जी ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर 'दूसरी परंपरा की खोज' लिखा। उसी तरह आलोचना में गोपाल राय तीसरी परंपरा की खोज कर रहे थे। जो न नगेन्द्र की परंपरा थी, न रामविलास शर्मा की। वे टेक्स्ट पर जोर देते थे। दोनों धाराओं की निर्मितियाँ अलग अलग थीं। डॉ॰ नगेन्द्र की धारा या नंददुलारे वाजपेयी की भाववादी आलोचना या मार्क्सवादी आलोचना की अपनी सीमा है। मुझे स्मरण आ रहा है। एक अमेरिका का आलोचक है—विलियम एम्पसन। उनका कथन है The greatest duty of critic is to follow his nose. नाक का काम है गंध ग्रहण करना, जड़ तक जाना। एक आलोचक का यही काम है। डॉ॰ राय ने जो मूल कृति पर जोर दिया उसकी यही मंशा थी कि आलोचना के इतर साधनों के अलावे मूल कृति को अधिक महत्त्व दिया जाय। कृति का स्वर मूल स्वर होना चाहिए। इस प्रकार कथालोचन की तीसरी परंपरा की खोज गोपाल राय कर रहे थे। पारंपरिक गुट से अलग हटकर उन्होंने लिखा। आलोचक की मौलिकता यही है कि विभिन्न विचारों के बीच वह समन्वय कैसे करता है और आलोचना का एक निकष तैयार करता है, जिसमें विषय प्रधान होता है। शिल्प का इस्तेमाल सहारे के रूप में करता है। गोपा़ल राय जी 'गोदान' को महान उपन्यास इसलिए मानते हैं क्योंकि गोदान की विषयवस्तु उनको विशेष रूप से आकर्षित करती है। उपन्यास पर जिन लोगों ने लिखा वो विदेशी राइटरों को बहुत उद्धृत किया। अपनी विद्वता की धाक जमाने के लिए उन्होंने आलोचना कृति नहीं भी पढ़ी तो कहीं से उद्धरण लेकर डाल दिया। गोपाल राय जी इससे बचते रहे। आलोचनाओं में उद्धरणों की भरमार हो जाती है उससे बचने की कोशिश की। कहीं-कहीं कृति का उद्धरण देते थे। उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में अपनी राह बनाई। आलोचक का काम है पाठकों का सहयोग करना। अच्छा साहित्य कैसे पढ़ा जाय, यह आलोचक बताता है। वह पाठकों का ध्यान आकृष्ट करता है कि कौन-सी कृति अच्छी है, कौन-से साहित्यकार हाशिये पर हैं। आलोचक निखालिस देशीपन, भाषा का, अपने साहित्य का, आलोचना का मानदंड तैयार करते हैं। जैसे लोहार भाथी से कोई औजार तैयार करता है। उनकी आलोचना के औजार आयातित नहीं है बल्कि उस लोहार की भाँति खुद के गढ़े हुए हैं।

माधव कुमार– आप तो उनके छात्र रह चुके हैं। एक शिक्षक के रूप में उनके प्रति आपकी क्या धारणा है?

डॉ. रामवचन राय– डॉ॰ गोपाल राय जी बहुत अनुशासनप्रिय,

बहुत अध्ययनशील और छात्रों के भविष्य के प्रति सरोकार रखनेवाले थे। एक तरह से छात्रों के भविष्य निर्माता थे। वे एक नजर में छात्रों को समझ लेते थे कि कौन क्या कर सकता है। कभी भी वर्ग को नहीं छोड़ते थे। समय पर कक्षा में आते थे। अप्रियता की हद तक जाकर अनुशासन का पालन कर लेते थे। विषय के अतिरिक्त कोई गप नहीं करते थे। उनका लेक्चर विषय केन्द्रित होता था "वे आचार्य नलिन विलोचन शर्मा की परंपरा के शिक्षक थे। शिक्षकों की पुरानी परंपरा के प्रतीक थे। वे पूरी तैयारी के साथ कक्षा में जाते थे। कक्षा में आने से पहले वो विषयवस्तु को पढ़कर आते थे। उनको कहीं संदेह होता था। तो कहते थे कि देखकर आऊँगा, तो बताऊँगा।" ये ईमानदारी थी उनकी।

माधव कुमार– डॉ० गोपाल राय पर केन्द्रित अपने एक लेख में आपने कहा है कि "इन्होंने हिन्दी आलोचना में अपना कोई गुट नहीं बनाया और न किसी गुट में शामिल हुए। पिछले दौर में जब मार्क्सवादी आलोचना अपने पूरे उठान पर थी और उस गिरोह में शामिल होकर प्रगतिशील कहलाना फैशन-सा हो गया था; डॉ० गोपाल राय ऐसी फैशनपरस्ती से बचते रहे।" गोपाल राय को उनके साहित्यिक अवदान के अनुरूप प्रसिद्धि नहीं मिली। इसका एक बड़ा कारण उनका गुटबंदी से अलग रहना तो नहीं?

डॉ. रामवचन राय– डॉ० गोपाल राय का नामवर जी से, डॉ. काशीनाथ जी से, रामविलास शर्मा सबसे परिचय था, किन्तु लिखते थे अपनी शर्तों पर। वे मार्क्सवादी नहीं थे, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे रूढ़िवादी थे। वे कृषक संस्कृति की उपज थे। किसान परिवार से थे। संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने वाले मेधावी छात्र थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वर्ग में हमेशा अव्वल आते थे। उनमें एक आत्मविश्वास था। अगर आत्मविश्वास नहीं होता तो किसी गुटबंदी में चले जाते। कोई वैशाखी ढूँढ़ते। उनके पिताजी बाहर चले गए थे। वे पैर से अपंग थे। स्कूल में बच्चे लंगड़ा कहकर चिढ़ाते थे, किन्तु उन्होंने अपनी शारीरिक अक्षमता को कभी आड़े आने नहीं दिया। आर्थिक अभाव एवं अपंगता का दंश झेलते हुए वे आगे बढ़े एवं दृढ़ निश्चयी बने।

पूनम सिन्हा– आपने कहा है कि "'समीक्षा' पत्रिका के माध्यम से डॉ० गोपाल राय ने समीक्षकों की कई पीढ़ियाँ तैयार की है।" इस विषय में विस्तार से बतायें।

डॉ. रामवचन राय–'समीक्षा' के माध्यम से वे सेतु का काम कर

रहे थे। उन्होंने देशभर के लोगों को जोड़ा। उत्तर से दक्षिण तक के लोगों को जोड़ा। नए लोगों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। पत्रिका प्रकाशित करने में भी सारा काम स्वयं करते थे। वे परफेक्टनिस्ट थे। पत्रिका निकालकर जब तक डिस्पैच नहीं हो जाती थी, तब तक वे लगे रहते थे। स्थापित लोगों के साथ-साथ उभरते लोगों को भी उन्होंने स्थान दिया।

शिक्षक या आलोचक बनना है तो गोपाल राय का नाम लें। एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए वो धैर्य, साधना, संघर्ष के बल पर जैसे उन्होंने अपने को खड़ा किया, उसी तरह अभी की नई पौध अपने को विकसित करे। परिश्रम का कोई विकल्प नहीं। अध्यवसाय के द्वारा उन्होंने अपने को स्थापित किया। इसका अभाव अभी के लोगों में है। वे अध्ययन, अध्यापन एवं परिश्रम के पर्याय थे।

पूनम सिन्हा– स्वातंत्र्योत्तर कथालोचना में उनके महत्त्व के विषय में आप बतायें।

डॉ. रामवचन राय– आलोचना का देशीपन उनमें है। पश्चिमी उद्धरणों से अपने को बचाते हुए अपना औजार उन्होंने तैयार किया। एक राष्ट्रीय फलक पर उनकी उपेक्षा हुई। पढ़ा सबको लेकिन अपने मन से काम किया। स्थापना अपनी रखी, अपना मानदंड रखा।

पूनम सिन्हा– डॉ० गोपाल राय से आपका संबंध सिर्फ शिक्षक-छात्र का रहा था, वह मैत्री-भाव में परिणत हुआ?

डॉ. रामवचन राय– मैं डॉ० गोपाल राय का बहुत सम्मान करता था। मैं उनका छात्र रहा हूँ और उनके साथ सहयोगी के रूप में भी काम किया। विभाग में कटुता के कारण मैंने एक बार बीच-बचाव भी किया। वे मुझे बहुत स्नेह भी देते थे। मुझसे एवं अन्य सहयोगियों के साथ उनका स्नेह था। उनको नहीं समझने के कारण उन्हें रूखा कहा जाता था। अप्रिय होने का जोखिम उठाकर भी वे सही बात कहते थे। पश्चिमी साहित्य को भी पढ़ा लेकिन नलिन विलोचन जी की तरह नहीं। डॉ० आर. के. सिन्हा को कोई रेफरेन्स लेना होता था तो वे नलिन विलोचन जी से लेते थे।

(डॉ० गोपाल राय के संदर्भ में डॉ० रामवचन राय के साथ यह संवाद आत्मीयतापूर्ण था। संवाद समाप्त होने के बाद उन्होंने आग्रह एवं स्नेहपूर्वक हमें गरम कचौड़ी और घी के लड्डू खिलाए)। ❑